

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 9, जोशुआ 6-8

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र संख्या नौ है, जोशुआ 6-8, जेरिको और ऐ।

ठीक है, नमस्ते। इस खंड में, अब हम पुस्तक के दूसरे प्रमुख खंड का शुभारंभ करने जा रहे हैं। मैं इस खंड में अध्याय छह से बारह तक शामिल करूंगा और कई टिप्पणीकार इसके बारे में भूमि की विजय, लड़ाई के रूप में बात करेंगे। पुस्तक का मुख्य जोर क्या है, ईश्वर का उपहार और विरासत इत्यादि के बारे में मेरी समझ के अनुसार, मैंने इस खंड को भूमि विरासत कहना चुना है।

लेकिन हां, ये अध्याय हैं, कम से कम छह से ग्यारह तक, जहां इज़राइल कनानियों के खिलाफ संघर्ष में लगा हुआ है। यह जेरिको में कनानियों के साथ पहली सैन्य शैली की मुठभेड़ के साथ धीरे-धीरे शुरू होता है और फिर हमारी जीत होती है, और यह एक महान जीत है, निश्चित रूप से भगवान ने जीत दी, लेकिन फिर हमें ठोकर खानी पड़ती है क्योंकि इज़राइल ने विश्वासघात किया और वे हार गए और फिर उन्हें उस मुद्दे का समाधान करना होगा और फिर वापस आकर दूसरा शहर, ऐ लेना होगा। फिर अध्याय नौ में गिबोनियों द्वारा इस्राएलियों को धोखा दिए जाने का मामला है।

हालाँकि, वहाँ एक आशा की किरण है क्योंकि वे कनानवासी हैं जो बच गए हैं और, एक तरह से, उसी तरह इज़राइल का हिस्सा बन गए हैं जैसे राहब अधिक सीधे तरीके से इज़राइल का हिस्सा बन गया। अध्याय दस एक प्रकार का सारांश है, संक्षेप में उसके परिणाम में एक विशिष्ट लड़ाई के बारे में बताता है और फिर दक्षिणी खंड में कई अन्य लड़ाइयों के बारे में बताता है, और फिर अध्याय ग्यारह देश के उत्तरी भाग में हुई लड़ाइयों के बारे में है। अध्याय बारह एक तरह से, केवल सारांश है, उन राजाओं की सूची है जिन पर विजय प्राप्त की गई थी और यही इस खंड को समाप्त करता है।

तो हम शुरू करेंगे, इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, इस खंड की एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि वे आदेश हैं जो भगवान ने पहले दिए थे कि सभी कनानियों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए। इसलिए, यदि आप केवल इन संदर्भों को लिखना चाहते हैं, तो हम उन्हें अभी नहीं देखेंगे, लेकिन व्यवस्थाविवरण अध्याय के बीस छंदों सोलह से अठारह में, भगवान इस्राएलियों से कहते हैं कि जब वे कनान में शहरों को प्राप्त करते हैं तो उन्हें उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए वहाँ। व्यवस्थाविवरण बीस श्लोक सोलह कहता है, उन जातियों के नगरों में जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे निज भाग करके देता है, उस भाषा पर फिर ध्यान देना, और जो कुछ सांस लेता है उसे जीवित न छोड़ना।

हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्वी, यबूसी, उन में से छः को यहीं सत्यानाश करो, जैसा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आज्ञा दी है। अन्यथा, वे तुम्हें उन सभी घृणित कामों का पालन करना सिखाएंगे जो वे अपने देवताओं की पूजा करते समय करते हैं, और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप करोगे। यहोशू ने स्वयं उन बातों को दोहराया, विशेष रूप से यहाँ अध्याय छह में।

तो, हम बस एक सेकंड के लिए यहां बीच में कूदेंगे। सत्रह और उसके बाद के श्लोकों में, यहोशू कहता है, नगर और उसके भीतर जो कुछ है वह विनाश के लिये यहोवा को समर्पित किया जाएगा। केवल राहाब वेश्या, और उसके सब साथी जीवित रहेंगे, क्योंकि उस ने भेजे हुए सन्देश को छिपा रखा था।

परन्तु तुम आप ही विनाश की वस्तुओं से बचे रहो। और इस तरह से। तो फिर से, दूसरे खंड में, हम नैतिकता के मुद्दे पर अधिक गहराई से बात करेंगे कि भगवान इन चीजों को कैसे आदेश दे सकते हैं।

लेकिन हम इस तथ्य से बच नहीं सकते कि यह ईश्वर है जो उन्हें आदेश दे रहा है, और यहोशू प्रभु की ओर से आदेश दे रहा है। और इसलिए यह उन चीजों में से एक है जो हमें पुस्तक के बारे में विराम देती है। लेकिन अभी, हम केवल उस बारे में बात करेंगे जो किताब हमें बता रही है, और फिर दूसरे खंड में उन अन्य मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

तो, अध्याय छह जेरिको के वास्तविक विनाश के बारे में अध्याय है। और देश में पहली जीत की कहानी अत्यंत विस्तार से बताई गई है। मैं अध्याय तीन में पानी के रुकने की कहानी का एक सादृश्य बनाऊंगा।

लेखक कथा को धीमा कर देता है। वह एक तरह से इसे देखता है और बार-बार इसका स्वाद लेता है, क्योंकि यह बहुत बढ़िया चीज़ है। यहां, जेरिको की परिक्रमा के छह दिनों और सातवें दिन के दौरान चरमोत्कर्ष तक पहुंचने के लिए धीमी और उत्कृष्ट प्रकार की इमारत का नेतृत्व किया जाता है।

मुझे लगता है क्योंकि लेखक चाहता है कि हम इसे याद रखें। हमें यह कहना चाहिए कि यहाँ निकट पूर्व का बहुत खराब मानचित्र है, आइए याद रखें कि इज़राइल यहाँ है, और वे अभी-अभी पार हुए हैं। जेरिको यहां की घाटी में एक तरह से प्रवेश द्वार शहर है।

और यहां एक मुख्य परिवहन राजमार्ग है, साथ ही यहां और यहां पर भी एक राजमार्ग है। और इसलिए, यह एक महत्वपूर्ण स्थान पर है। यह यरूशलेम से, जो लगभग यहीं है, अधिक दूर नहीं है।

और इसलिए, इज़राइल जेरिको पर कब्ज़ा करने के लिए आ रहा है, यह कनान के महान किलेबंद शहरों में से एक है। पुरातात्विक रूप से, जेरिको की खुदाई की गई है, और उस शहर की महान दीवारें हैं। पुरातत्त्ववेत्ता यह जानने के लिए इधर-उधर भटकते रहे हैं कि पुस्तकों का सही समय निर्धारण कैसे किया जाए और कब किया जाए।

आप पढ़ेंगे कि जॉन गारस्टैंग नामक एक प्रारंभिक विद्वान थे जिन्होंने दीवारों की खोज की और उनका श्रेय जोशुआ को दिया। 1950 और 60 के दशक में, कैथलीन केनियन नाम के एक ब्रिटिश पुरातत्वविद् ने इस पर विवाद किया और उन्हें दिनांकित किया और कहा कि नहीं, इसराइलियों द्वारा जेरिको को लेने का कोई सबूत नहीं है। और फिर, हाल ही में, 80 और 90 के दशक में और उसके बाद, ब्रायंट वुड नामक एक अन्य विद्वान ने तर्क दिया है, नहीं, कि केनियन के डेटिंग के तरीके गलत थे।

और वह इसका खंडन करने में बहुत विस्तृत था। और मैं कहूंगा कि वुड का शब्द इस बिंदु पर अंतिम शब्द है। और, हां, इस बात के बहुत प्रशंसनीय सबूत हैं कि, हां, जिस समय चर्चा की जा रही है, उस समय जोशुआ ने जेरिको को नष्ट कर दिया था।

पुनः पूर्व तिथियों में लगभग 1400 ई.पू. लेकिन इस अध्याय में बताया गया विवरण शहर के महत्व और निश्चित रूप से, पहली बार, पहली घटना के महत्व को प्रमाणित करता है। बाद की घटनाएं अधिक संक्षेपण फैशन हैं।

लेकिन अध्याय 6, श्लोक 1 शुरू होता है, कहानी की शुरुआत के लिए मंच तैयार करता है, और हमारे सामने एक समस्या प्रस्तुत करता है। समस्या यह है कि इजराइल के लोगों के कारण जेरिको अंदर और बाहर बंद है। अब, याद रखें, अध्याय 5, श्लोक 1 में, देश के सभी लोग इस्राएल से डरते थे, लेकिन उन्होंने रक्षात्मक रूप से शहर को बंद कर दिया था।

तो, कोई अंदर नहीं गया, कोई बाहर नहीं आया। और आप इसे जेरिकोइट्स के दृष्टिकोण से समझ सकते हैं। लेकिन इस्राएलियों के दृष्टिकोण से, यह एक समस्या होने वाली है।

वे अंदर कैसे आएंगे? जब शहर को इस तरह से किलेबंद और बंद कर दिया गया है तो वे उस पर कैसे कब्जा करेंगे? तो, भगवान, अध्याय 6, श्लोक 2, यहोशू से कहते हैं, देखो, मैंने दे दिया है। वहाँ बीते हुए समय को फिर से देने की क्रिया है। अब, जाहिर है, वे अभी तक वहाँ नहीं हैं।

उन्होंने इसे नहीं लिया है। तौभी परमेश्वर कहता है, मैंने तुझे नगर दिया है। तो, यह उस बिंदु को दर्शाता है जो हमने अध्याय 1, श्लोक 3 में कहा था। यह, एक अर्थ में, भगवान के हाथ में किया गया सौदा है।

इस पर इजराइल का कानूनी अधिकार है। मैंने यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे हाथ में कर दिया है, और वे नगर के चारों ओर मार्च करेंगे। सभी युद्ध पुरुष छह दिनों तक, सातवें दिन, सात बार ऐसा करें, तुरही बजाएँ, और अंततः दीवारें गिरने वाली हैं।

यहाँ इन श्लोकों में बहुत विस्तार से बताया गया है। यह एक तरह से हमें वह कहानी बताता है। यह एक तरह से दोहराया जाता है।

कुछ देर बाद, शायद हिब्रू आख्यान की पुनरावृत्ति से हमारी आंखें चौंधिया जाती हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह हमें पेंटाटेच में अनुष्ठानों की याद दिलाने के लिए है। यह लगभग वैसा ही है जैसे

यह जेरिको के विनाश या कब्जे को उसी तरह प्रस्तुत कर रहा है जैसे फसल के त्योहार का जश्न या अन्य प्रकार की चीजों के त्योहार को दिनों को चिह्नित करके और कैलेंडर को चिह्नित करके।

और यह इसे अपने ही प्रकार के अनुष्ठान, एक भेंट, प्रभु के लिए होमबलि की तरह स्थापित कर रहा है। और मुझे लगता है कि यह इस बात का संकेत है कि इसे यहां कैसे बताया गया है और यह किस तरह से सामने आता है। अन्यथा, जाहिर है, भगवान कह सकते थे, तुरंत घूमो और दीवारें गिर जाएंगी।

लेकिन भगवान उन्हें अध्याय 5 में अनुष्ठानों को आगे बढ़ाने और उन्हें याद दिलाने के लिए इस विस्तृत अनुष्ठान से गुजरते हैं कि यह सिर्फ एक सैन्य चीज नहीं है। यह प्रभु के लिए एक बलिदान है, और इसे प्रभु को समर्पित किया जाना है। तुम्हें लूट का माल अपने पास नहीं रखना है।

तुम्हें इसे पहले फल के समान परमेश्वर को देना है, जैसे कि जब भी तुम फसल काटते हो तो भूमि का पहला फल देते हो। एक तरह से यह पहला शहर और पहला फल है। और आपको बाद में याद है जब आकान लेता है, अवज्ञा करता है और चीजें लेता है, तो उसे बाद में बताया जाता है कि, मुझे खेद है जब वह मारा जाता है और फिर लोग अध्याय 8 में जाते हैं, भगवान लोगों को निर्देश देते हैं कि उन्हें लूट का माल लेना चाहिए ऐ.

और इसलिए, यदि अचन ने अभी इंतजार किया होता, तो वह लूट का कुछ हिस्सा खुद ही प्राप्त कर सकता था। लेकिन फिर भी, यहाँ वापस, इसलिए धीमी गति से निर्माण हो रहा है। और फिर सातवें दिन में, देखिए पद 15 में क्या कहा गया है।

वे दिन के उषाकाल में जल्दी उठ गये। वे जोशुआ की किताब में बहुत जल्दी उठ रहे हैं। अध्याय 3, पद 1 में यहोशू स्वयं जल्दी उठता है। और यहाँ वे ऐसा कर रहे हैं।

वे जाने के लिए तैयार हैं। और सब कुछ विनाश के लिए समर्पित है, श्लोक 17। और केवल राहब को जीवित रहने दो, वगैरह।

चीजें अपने लिए मत लो. चाँदी और सोना, पद 19, प्रभु के लिए पवित्र हैं। वे राजकोष में जायेंगे.

और इसलिए, पद 20 में, लोगों ने जयजयकार किया और तुरही बजाई गई। जैसे ही लोगों ने तुरही की आवाज सुनी, लोग चिल्लाये और दीवार भरभराकर गिर पड़ी। और लोग नगर में चढ़ गए, हर एक मनुष्य अपने साम्हने सीधा आया।

उन्होंने शहर पर कब्जा कर लिया। यहां रुकने का कारण यह है कि मुझे लगता है कि अध्याय 3 में जिस तरह से चमत्कार का वर्णन किया गया है, उसके बीच विरोधाभास देखना वास्तव में दिलचस्प है। धीरे-धीरे निर्माण करना और इसका स्वाद लेना, क्रियाओं को बार-बार दोहराना, और इसे वापस देखना, अध्याय 4, पानी खड़ा हो गया, इत्यादि। उस चमत्कार पर लंबे समय तक जोर और ध्यान दिया गया।

यहाँ, यह लगभग वैसा ही है जैसे, धमाका, भगवान ने यह किया। और अनायास ही, दीवार गिर जाती है, और यहीं इसका अंत होता है। आगे कुछ नहीं है, कथा आगे बढ़ती है।

तो, दिलचस्प विभिन्न तरीके हैं। ये किताब के पहले दो चमत्कार हैं, और यह दिलचस्प है कि इन दोनों के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है, एक दूसरे से थोड़ा अलग। तो फिर, श्लोक 22 से 26 में, हम यहोशू को उन लोगों को निर्देश देते हुए देखते हैं जो राहाब से मिलने गए थे कि वे उसे और उसके परिवार को खोजें और उन्हें बाहर ले आएँ, और अन्यथा उन्होंने शहर में सब कुछ जला दिया।

आग से, पद 24। और उन्होंने राहाब और वेश्या को बचाया, पद 25, और उसके पिता के घराने को, सब उसके हो गए। वह आज तक इस्राएल में रहती है, क्योंकि उस ने दूतोंको छिपा रखा।

तो यह वह संदर्भ है जिसका हमने पहले उल्लेख किया था। राहाब स्वयं, शारीरिक रूप से, क्या वह आज तक इज़राइल में रहती थी? खैर, हो सकता है, या हो सकता है कि यह उसका घर हो, उसके वंशज हों। निस्संदेह, हम नए नियम में यीशु की वंशावली में राहाब को देखते हैं।

और फिर इसका समापन यह होता है कि यहोशू शहर को श्राप देता है। आप इसे श्लोक 26 में देखते हैं। वह व्यक्ति जो उठकर नगर का पुनर्निर्माण करता है, प्रभु के सामने शापित हो।

वह अपने पहलौठे बच्चे की कीमत पर उसकी नींव रखेगा। अपने दूसरे बेटे की कीमत पर वह अपने द्वार स्थापित करेगा। तो, जेरिको पर श्राप है।

और इसके बाद वास्तव में इस पर कभी भी किसी महत्वपूर्ण तरीके से कब्जा नहीं किया गया। लेकिन 1 किंग्स की पुस्तक में इस श्राप, या इस प्रकरण की बहुत नाटकीय पूर्ति है। तो मैं इसकी ओर रुख करूँगा, यदि आप भी इसकी ओर मुड़ना चाहते हैं, 1 किंग्स 16।

और यह अहाब के दिनों में है, शायद 600, 500, 600 साल बाद। अहाब उस समय तक का सबसे दुष्ट राजा था। और 1 राजा 16, श्लोक 33 को देखो।

बाल की पत्नी के सम्मान में एक अशेरा, एक खम्भा बनवाया। उसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के लिये उस से पहिले इस्राएल के सब राजाओं से भी अधिक काम किया। और फिर पद 34.

उसके समय में, बेथेल के एल ने जेरिको का निर्माण किया। यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने नून के पुत्र यहोशू के द्वारा कहा था, उस ने अपने पहिलौठे अबीराम की कीमत पर उसकी नेव डाली, और अपने छोटे पुत्र सगुब की कीमत पर उसके फाटक लगवाए। वास्तव में दिलचस्प, नाटकीय, दुखद पूर्ति, यहोशू 6 के अंश की प्रतिध्वनि। दुखद रूप से, किसी ने ऐसा किया, और उसे इसके कारण पीड़ा हुई।

तो यह है शहर पर कब्जा करने की कहानी। और नगर विनाश के लिये यहोवा को समर्पित किया जा रहा है। कुछ भी नहीं ले जाना था।

यह आपके पशुओं या आपकी फसल, चाहे वह कुछ भी हो, का पहला फल चढ़ाने जैसा है। और देश में ही, जेरिको को चीजों का दसवां हिस्सा बनना था, और उन्हें किसी भी तरह से भौतिक रूप से इससे लाभ नहीं होना था। और, निःसंदेह, अगले अध्याय में चीजें बिल्कुल विपरीत दिशा में चली जाती हैं।

तो, अध्याय 7 हमें अगले शहर में इज़राइल की हार के बारे में बताता है, जो जेरिको के ठीक पास था। हम ऐ या ऐ के सटीक स्थान के बारे में बिल्कुल निश्चित नहीं हैं। यह वास्तव में कहाँ स्थित था, इस बारे में बहुत चर्चा और बहस हुई।

अपने उद्देश्यों के लिए, हम इसके बारे में चिंता नहीं करेंगे। यह ठीक पश्चिम की ओर है, उस आसपास कहीं 5, 10 मील। और इसलिए, इस अध्याय में, अध्याय 7, मैं इस खंड को वाचा की अवज्ञा के रूप में संदर्भित करूंगा।

और हम इसे पद 1 में आरंभ से ही देखते हैं। अध्याय 7, पद 1। इस्राएल के लोगों ने समर्पित वस्तुओं के संबंध में विश्वास तोड़ दिया, ये चीजें जो विनाश के लिए समर्पित थीं। और यहां ध्यान देने योग्य दो बातें हैं। कहने का मतलब है, ध्यान दें कि यह इसराइल के लोग हैं जिन्हें पद 1 में दोषी ठहराया गया है। लेकिन हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि यह वास्तव में एक व्यक्ति है, अचन।

उन्होंने इस्राएल की समर्पित वस्तुओं के संबंध में विश्वास तोड़ दिया। क्योंकि करमी का पुत्र आकान, जो जब्दी का पोता था, इत्यादि, ने अर्पण की वस्तुओं और यहोवा के कोप में से कुछ ले लिया, और लोगों पर भड़क उठा। तो, यहां व्यक्ति और राष्ट्र के बीच इस प्रकार की परस्पर क्रिया है।

और यह विचार कि एक व्यक्ति के पाप राष्ट्र को प्रभावित करते हैं और निश्चित रूप से, इसके विपरीत। और यह एक ऐसा विषय है जिसे हम पुराने नियम के अधिकांश भाग में देखते हैं। तो यह पहली बात है।

ध्यान दें कि एक व्यक्ति के पाप ने बड़े समूह को प्रभावित किया। लेकिन दूसरी बात, ध्यान दें कि मेरे संस्करण में यह शब्द कहता है कि विश्वास टूटा। मुझे लगता है कि कुछ संस्करण कुछ ऐसा कहते हैं जैसे कि बेवफ़ाई से काम किया गया, कुछ इसी आशय का।

और इसलिए, वहां हिब्रू शब्द क्या है? इस शब्द का प्रयोग संख्या 5 में यह बताने के लिए किया गया है कि एक पत्नी व्यभिचार करके अपने पति के प्रति किस प्रकार व्यवहार करेगी। दूसरे शब्दों में, विवाह की वाचा को तोड़ना, और बेवफ़ाई करना। वहाँ, वही शब्द यहाँ प्रयोग किया गया है।

यह दो पक्षों के बीच विश्वास का विश्वासघात है। तो, यरीहो से इन निषिद्ध चीजों को लेने में, आकान उस वाचा के भरोसे को तोड़ रहा था जिसे इज़राइल ने भगवान के साथ बनाया था। और

अध्याय 1 को याद करें, इस्राएल ने यहोशू, जो परमेश्वर का प्रतिनिधि था, की आज्ञा मानने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया था।

और फिर भी यहां हमारे पास अवज्ञा का एक शानदार उदाहरण है। तो, श्लोक 11 इसे स्पष्ट करता है। आइये श्लोक 11 को देखें।

तो, उसने, अर्थात् अचन, जहाज़ का निर्माण किया... मुझे क्षमा करें, मैं अध्याय 6 में हूँ। मैं अध्याय 7, श्लोक 11 को देखना चाहता हूँ। मुझे वह ढूँढने दीजिए। दरअसल, मैं चाहता हूँ... हाँ, श्लोक 11 बहुत सी बातें कहता है।

देख, परमेश्वर यहोशू से यों कहता है, पद 10, अध्याय 7, उठ! तुम मुँह के बल क्यों गिरे हो? क्योंकि निःसंदेह, यहोशू ने प्रभु के विरुद्ध शिकायत और विलाप की यह प्रार्थना की है। परन्तु परमेश्वर कहता है, इस्राएल ने बहुत से काम किए हैं। अब अध्याय 7, श्लोक 1 पर ध्यान दें। इसमें कहा गया है कि आकान ने कुछ समर्पित चीजें लेकर विश्वास तोड़ दिया।

तो, वहाँ दो क्रियाएँ हैं। विश्वास को तोड़ना, अनुबंध को तोड़ने जैसा अधिक सामान्य सार है। समर्पित चीजें लेना, और बस इतना ही।

लेकिन श्लोक 11 में भगवान का अभियोग, उस टूटे हुए विश्वास के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। श्लोक 11, इस्राएल ने पाप किया है। ऐसा कैसे? नंबर एक, उन्होंने मेरी वाचा का उल्लंघन किया है।

तो, वहाँ वाचा है, वाचा तोड़ने का यह विचार। कि मैं ने उन्हें आज्ञा दी है। नंबर दो, उन्होंने कुछ समर्पित चीजें ले ली हैं।

उन्होंने चोरी की है, नंबर तीन. उन्होंने झूठ बोला है, नंबर चार. उन्होंने उन्हें अपने सामान पर रख दिया है।

तो, भगवान इस एक पाप को लेते हैं और इसके विभिन्न पहलुओं को छेड़ते हैं और दिखाते हैं कि यहां बहुत सारे पाप किए गए हैं। और फिर, उन्होंने पूरे देश को दोषी ठहराया है, केवल इस एक व्यक्ति को नहीं। तो इसलिए, श्लोक 12 में, इस्राएल के लोग अपने शत्रुओं के सामने खड़े नहीं रह सकते।

यह एक विडंबनापूर्ण कथन है क्योंकि याद रखें कि यह वही शब्द है जो अध्याय 1 में पाया गया है और जब भगवान यहोशू से कहते हैं, यहां कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर पाएगा। इस्राएल अपने शत्रुओं का सामना नहीं कर सकता। और वे अपने शत्रुओं से मुँह मोड़ लेते हैं, क्योंकि कनानियों के विपरीत जो विनाश के लिये समर्पित थे, वे स्वयं विनाश के लिये समर्पित किये गये हैं।

अब इजराइल भी उसी चीज का विषय बनता जा रहा है. इसलिये परमेश्वर कहता है, मैं अब तेरे संग न रहूंगा। और हम बस उसे पढ़ सकते हैं और उसके महत्व को नहीं पकड़ सकते हैं।

लेकिन याद रखें, भगवान बार-बार कहते हैं, मैं उनके लोगों, नेताओं, इत्यादि के लिए आपके साथ रहूंगा। और यहाँ, भगवान कहते हैं, मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। मैं वापस ले लूँगा।

और आप में से कुछ लोग जानते हैं कि बाद में 1 शमूएल 4 में, जब सन्दूक पर पलिशियों ने कब्जा कर लिया, तो परमेश्वर की उपस्थिति चली गई और वहाँ इचबोड नाम का कोई व्यक्ति था और वहाँ का हिब्रू इचबॉड है। महिमा वहाँ नहीं है। यह भगवान की अनुपस्थिति है।

और यह भयानक है, इज़राइल में वफादारों के लिए यह एक भारी बात होनी चाहिए। तो भगवान के निर्देश, श्लोक 13, उठो, लोगों को पवित्र करो, कल के लिए खुद को समर्पित करो क्योंकि भगवान ऐसा कहते हैं, ये समर्पित चीजें हैं और कुछ होना ही है। यह अध्याय 3, श्लोक 5 की प्रतिध्वनि है, जब यहोशू कहता है, अपने आप को पवित्र करो क्योंकि कुछ महत्वपूर्ण होने वाला है, अर्थात् लाल सागर को पार करना, चमत्कार, जॉर्डन को पार करना।

यहाँ, कुछ घटित होने वाला है। यह अधिक नकारात्मक है, जिसका अर्थ है अचन की पहचान करना और उसके साथ व्यवहार करना। लेकिन वे भी, यह एक गंभीर अवसर है।

इसके लिए उन्हें स्वयं को समर्पित करने की आवश्यकता है। और उसके बाद यह चलता रहता है। तो, अध्याय 7, श्लोक 16, यहोशू फिर सुबह जल्दी उठता है, और इस्राएल को जनजाति जनजाति के पास लाता है।

और यहाँ हमारे पास बाहर से एक दिलचस्प तरह का उदाहरण है, अगर हम इज़राइल के समाजशास्त्र, प्राचीन इज़राइल और राष्ट्र के सामाजिक निर्माण में रुचि रखते हैं, तो हम यहाँ एक अच्छा उदाहरण देखते हैं। इसलिए, वह इस्राएल को जनजाति दर जनजाति एक साथ लाता है। और वे कुछ कर रहे हैं।

बहुत कुछ डालने जैसा लगता है। लेकिन किसी तरह, श्लोक 16 कहता है, यहूदा के गोत्र की पहचान की गई, उसे ले जाया गया और इस गोत्र के सभी कुलों के पास लाया गया और जेरहियों के कुल को ले लिया गया। वह जेरहियों के कुल को एक एक करके ले आया, और जब्दी ले लिया गया।

और वह एक एक पुरूष को घर के निकट लाता है। आकान जो जेरहियों का पुत्र और जब्दी का पोता था, पकड़ लिया गया। इस प्रकार, हम राष्ट्र, जनजातियों, कुलों, परिवारों और फिर व्यक्ति के सामाजिक संगठन को देखते हैं।

और इस तरह से हमें वहाँ के समाज के स्तरीकरण के बारे में थोड़ा पता चलता है। और इसलिए, यहोशू आकान को संबोधित करता है और उसे चार बातें बताता है, उसे चार बातें आदेश देता है। पद 19 में वह कहता है, हे मेरे पुत्र, हे प्रधान, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की महिमा कर।

नंबर दो, उसकी स्तुति करो। नंबर तीन, अब बताओ तुमने क्या किया है। इसका दूसरा पहलू, इसे मुझसे मत छिपाओ।

तो, वहाँ चार क्रियाएँ हैं, चार आदेश हैं। हालाँकि, मेरा विचार है कि यह दो के दो समूह हैं। और पहला यह कि यहोवा की महिमा करो, और उसकी स्तुति करो।

और दूसरे दो उसी की अभिव्यक्ति हैं। दूसरे शब्दों में, सच बोलकर, आप भगवान की महिमा कर रहे हैं, भगवान की स्तुति कर रहे हैं। अतः अब मुझे बताओ कि तुमने क्या किया है, इसे मुझसे मत छिपाओ।

इसी तरह आपको अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण क्षण में भगवान की स्तुति करनी चाहिए। किसी भी स्तोत्र का आरंभ न करें, बस मुझे सच बताएं। वह यहां यही कह रहा है।

मुझे लगता है कि यह आज के लिए एक सबक है। जैसा कि हम सच कहते हैं, हम ईमानदारी का जीवन जी रहे हैं, लेकिन इस प्रक्रिया में, एक अर्थ में, हम भगवान की महिमा कर रहे हैं और भगवान की स्तुति कर रहे हैं। विशेष रूप से, निःसंदेह, हमारी संस्कृति में जहां सत्य को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना उसे दिया जाना चाहिए।

तो, अचन जवाब देता है और वह कबूल करता है। और वह देखता है, वह लूट के बारे में बात करता है और यह कितना अद्भुत था और वह इसे कैसे लेना चाहता था। इसलिए, वे गए और सामान उसके तंबू में पाया।

दुःख की बात यह है कि अचन के पूरे परिवार को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। पूरा देश तो नष्ट नहीं हुआ, लेकिन उनका परिवार नष्ट हो गया। उन्होंने उस पर पथराव किया, और उसे आग में जला दिया, पद 25।

और उन्होंने उसके ऊपर पत्थरों का एक बड़ा ढेर खड़ा कर दिया, जो आज तक वहीं पड़ा हुआ है, जब से वह पुस्तक लिखी गई। इसका नाम आचोर की घाटी कहा जाता है। और अचोर शब्द का अर्थ है परेशानी।

तो ये वो घाटी है जहां बड़ी मुसीबत थी। तो यह इजराइल के इतिहास का एक बहुत ही दुखद प्रकरण है। और निश्चित रूप से, यहोशू की पुस्तक में, यह पुस्तक का निम्न बिंदु है।

अधिकांश किताब के लिए, यह खुशी की किताब है। और जैसा कि हमने पहले कहा, यह एक ऐसा अर्थ है जिसमें इस्राएली कह रहे हैं, हम अंततः यहाँ हैं। और जीवन अच्छा है।

वादे पूरे करना. हम सब कुछ ठीक किताब के अनुसार करने जा रहे हैं। वादे निभाए जा रहे हैं।

आदेश पूरे हो रहे हैं। और इसी तरह। और फिर भी, यह पुस्तक का निचला बिंदु है, क्योंकि एक व्यक्ति अनुबंध तोड़ता है, और ये चीजें करता है, भगवान इसे पूरी तरह से अलग रोशनी में देखता है, और राष्ट्र पीड़ित होता है।

हम इसे अध्याय 8 में देखेंगे। लेकिन दुख की बात है कि आचन और उसका परिवार अध्याय 7 में पीड़ित हैं। इसलिए जैसे ही हम अध्याय 8 में जाते हैं, हमारे पास होता है मुझे क्षमा करें, मुझे वापस जाने की जरूरत है, क्योंकि मैं नहीं गया हूँ काफी कालानुक्रमिक रूप से चल रहा है, और मैं आपको इसे इंगित करने के लिए अध्याय 7 की शुरुआत में भी ले जाना चाहता हूँ। इससे पहले कि अचन का पता चले, जाहिर तौर पर यह अध्याय ऐ में राष्ट्र की हार के बारे में बात कर रहा है। जेरिको में शानदार जीत।

अब यहां ऐ में हार हुई। लेकिन मुझे लगता है कि अध्याय 6 में यह नोटिस करना दिलचस्प है, हम श्लोक 2, अध्याय 6 में भगवान को यहोशू से बात करते हुए देखते हैं। प्रभु ने यहोशू से कहा, मैंने जेरिको को तुम्हारे हाथ में दे दिया है, आदि, आदि, आदि। अध्याय में सब कुछ 6 स्पष्टतः परमेश्वर की ओर से है।

और अनुष्ठान और वे सभी चीजें। अध्याय 7 में ध्यान दें, जब लोग ऐ पर हमला करने के लिए निकलते हैं, तो भगवान इसमें शामिल नहीं होते हैं। अध्याय 7, श्लोक 2 में, यहोशू ने यरीहो से ऐ को पुरूष भेजे, और उन से कहा, जाओ देश का भेद लो।

वे गए और जासूसी की, वे वापस आए, और कहा, आह, इसके बारे में चिंता मत करो। हमें हर किसी को भेजने, दो या तीन हजार भेजने और ऐ पर हमला करने की जरूरत नहीं है। तो, तीन हजार चले गए, और वे हार गए।

छत्तीस लोग मारे गए, श्लोक 5। और इसे करारी हार माना गया। और पुस्तक के शेष भाग और पेंटाटेच की लड़ाइयों के माध्यम से, हम वास्तव में पराजित लोगों की संख्या नहीं जानते हैं। लेकिन तीन हजार, छत्तीस की सेना एक बहुत छोटी संख्या है।

फिर भी इसे करारी हार माना जा रहा है। लेकिन फिर से ध्यान दें, भगवान यहां कहीं नहीं है। और मुझे ऐसा लगता है कि यह पुस्तक के लेखक के संदेश का हिस्सा है, जो हमें यह बताने की कोशिश कर रहा है कि ईश्वर की उपस्थिति नहीं है।

और इसीलिए वे हार गये। अध्याय 8 पर पहुँचें, और अब भगवान तस्वीर में वापस आ गए हैं। अध्याय 8, श्लोक 1 में, प्रभु ने यहोशू से कहा, मत डर, तेरा मन कच्चा न हो।

फिर से, अध्याय 1 को दोहराते हुए, लड़ने वाले लोगों को अपने साथ ले जाओ, ऐ तक जाओ, और मैंने ऐ के राजा को तुम्हारे हाथ में दे दिया है, इत्यादि। तो, वह सारी शब्दावली अध्याय 1 को प्रतिध्वनित करती है, अध्याय 6 को प्रतिध्वनित करती है, लेकिन अध्याय 7 को नहीं। अध्याय 7 बाहरी है, और यह पाप के कारण है। तो, वे वापस जाएं, और इस बार निस्संदेह एक बड़ी जीत होगी।

वहाँ है, इसे बहुत विस्तार से बताया गया है। यह एक लंबा अध्याय है, और इसमें तीस हजार वीर लोग हैं जो रात में निकलते हैं, और वे शहर के पश्चिम में घात लगाने जा रहे हैं। और यहोशू ने वहीं रात बितायी।

इस बात को लेकर थोड़ा भ्रम है कि चीजें कितनी बार हो रही थीं, या विभिन्न समूह कौन से थे। इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय 8, श्लोक 12 में, यहोशू का पांच हजार पुरुषों के एक समूह के साथ उल्लेख है, और अध्याय 8 श्लोक 3 में, यह तीस हजार पुरुषों का उल्लेख करता है। और इसलिए, आप जानते हैं, यहाँ क्या हो रहा है? ऐसा प्रतीत होता है कि श्लोक 11 से 13 एक प्रकार का प्लैशबैक है, और यह भी प्रतीत होता है कि शायद संख्याओं में कोई कमी है, और हो सकता है कि इनमें से एक के बारे में लिखने योग्य गलती हो, इसलिए पाँच, मेरे विचार में, पाँच हजार और तीस हजार एक ही समूह हैं।

और हो सकता है, वहाँ केवल प्रतिलिपि बनाने में कोई त्रुटि हो। तीस हजार का समूह और पांच हजार का अलग समूह नहीं है। तो, यहाँ वही हो रहा है।

तो, फिर जब सुबह होती है, और वे, आप जानते हैं, यहोशू रात को दो अलग-अलग बार बिताता है, या दो बार इसका उल्लेख करता है, श्लोक 9 और श्लोक 13 में। लेकिन फिर, श्लोक 14 और उसके बाद, यह दिखाता है कि कैसे राजा ऐ इस छोटे समूह को देखता है, यह समूह पश्चिम की ओर है, और उस रास्ते से तेजी से निकलता है, और मुख्य सेना उनके पीछे आती है, और शहर पर कब्जा कर लेती है। इसलिए, श्लोक 17 में, ऐ या बेतेल में कोई भी व्यक्ति नहीं बचा जो इस्राएल के पीछे नहीं गया, और शहर खुला छोड़ दिया गया है।

तो, यहोशू परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि वह अपना भाला अपने हाथ में रखे, वह सब कुछ उसके हाथ में दे देगा, और वह ऐसा करता है, और इस्राएली अंदर चले जाते हैं। और, पद 20, मुझे क्षमा करें, हाँ, पद 20, ऐ के लोग पीछे मुड़कर देखते हैं, शहर का धुआं उठता हुआ देखते हैं, और उन्हें एहसास होता है कि वे हार गए हैं। वे ऐ के राजा को पकड़ते हैं, पद 23, उसे यहोशू के पास लाते हैं, और यह सब, मूल रूप से, इस्राएलियों के लिए एक बड़ी जीत है।

पद 25 में इस्राएलियों ने, जो प्रतीत होता है, 12,000 लोगों को मार डाला। परन्तु यहोशू ने अपना हाथ पीछे नहीं खींचा, जिससे उसने भाला बढ़ाया था, जब तक कि उसने सभी निवासियों को नष्ट नहीं कर दिया, और फिर उसने शहर को जला दिया, पद 26, राजा को फाँसी पर लटका दिया . तो, यह एक बड़ी जीत है।

फिर, इससे हमें थोड़ी परेशानी महसूस हो सकती है, और आज हम अपनी संवेदनाओं में असहज हो सकते हैं, लेकिन अध्याय 7 में उनके बीच से बुराई को दूर करने के जवाब में यह बड़ी जीत थी। अब, वे चीजें कर रहे हैं पुस्तक के अनुसार, ईश्वर उन्हें ऐसा करने के लिए कह रहा है, और यह कार्यान्वित हो रहा है। वह खंड, फिर, पत्थरों के एक बड़े ढेर के साथ समाप्त होता है, जो, फिर से, आज तक वहीं खड़ा है, जब भी ऐसा हुआ हो। तो, यह खंड, 6, 7, और 8, हमें दो या शायद तीन सबसे बड़ी शुरुआती लड़ाइयों की कहानी बताते हैं, जेरिको में महान जीत, ऐ में हार, और फिर ऐ में जीत, और उन्हें इसमें बताया गया है हमें उस एहसास को प्राप्त करने में मदद करने के लिए अति सुंदर विवरण।

अब, बाद में, हम और अधिक सारांश प्रकार के बयान देने जा रहे हैं, लेकिन इससे पहले कि हम कनानियों के साथ बातचीत के संदर्भ में अगले प्रकरण पर जाएं, अध्याय 8 के अंत में, हमारे पास

एक खंड है जहां जोशुआ एक वेदी बनाता है प्रभु के लिए, अध्याय 8, पद 30-35। यह एक दिलचस्प अनुभाग है. यह उस आदेश की पूर्ति है जो परमेश्वर ने मूसा के दिनों में अपने लोगों को दिया था।

जब परमेश्वर ने उनसे बात की, तो उनके देश में आने से पहले, उन्हें इस स्थान पर एक वेदी बनाने के लिए कहा गया। तो, मैं आपको उस अनुच्छेद में ले जाना चाहता हूं, जो व्यवस्थाविवरण, अध्याय 27 में है। इसलिए, यदि आप चाहें तो कृपया वहां जाएं।

उस अध्याय की शुरुआत में, मूसा ने उन्हें निर्देश दिया कि जब वे भूमि पर पहुँचें, तो उन्हें बड़े पत्थरों की एक वेदी बनानी होगी। तो, हम बस उस पर गौर करेंगे और उसकी समीक्षा करेंगे। तो, व्यवस्थाविवरण 27, श्लोक 1 और निम्नलिखित।

मूसा ने प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, जो आज्ञा मैं आज तुम्हें सुनाता हूँ उसका पालन करो, पद 2, जिस दिन तुम यरदन पार होकर उस देश में पहुंचो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है, उस समय बड़े बड़े पत्थर खड़े करके उन पर प्लास्टर करना प्लास्टर. जब तू उस देश में प्रवेश करने को पार उतरे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, और जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, तब तू उन पर इस व्यवस्था की सब पुस्तकें लिखना। जब तू यरदन पार हो जाए, तब इन पत्थरोंको जिनके विषय में मैं आज तक तुझे आज्ञा देता हूँ, एबाल पर्वत पर खड़ा करना।

तो, ये वे पत्थर नहीं हैं जिन्हें उन्होंने जॉर्डन नदी के किनारे खड़ा किया था। जैसे ही आप भूमि में आए, वे यहां भूमि में आए, लेकिन एबाल और गिरिजिम पर्वत भूमि से लगभग 25, 30 मील उत्तर में ऊपर हैं। और यहीं उन्हें यह करना था।

और फिर, उन्हें पत्थर लेने थे और उन्हें प्लास्टर से ढंकना था और फिर प्लास्टर पर वे शब्द लिखना था जो भगवान उन्हें आदेश देते हैं। और पद 5, यहोवा के लिये एक वेदी बनाना, उस में तू कोई लोहे का औज़ार न चलाना। दूसरे शब्दों में, ये बिना काटे हुए पत्थर होंगे, वहां होमबलि चढ़ाओ, मेलबलि चढ़ाओ, और आनन्द मनाओ।

इस कानून के पत्थरों पर साफ-साफ शब्द लिखो। तो, यहाँ ये निर्देश हैं। अब, यदि हम पद 2 में दी गई आज्ञा को अक्षरशः लें कि जिस दिन तुम यरदन पार करो, जो देश तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है, उसी दिन तुम यही करना, तो हम देखते हैं कि इस्राएल ने यह तुरंत नहीं किया।

या तो भगवान का शाब्दिक अर्थ था कि उसी दिन यहां 25, 30 मील, हजारों लोगों के साथ ऊपर जाना था, या शायद इसका मतलब यह है कि जिस समय आप पार करें, सुनिश्चित करें कि आप वहां जाएं। हम इसके बारे में निश्चित नहीं हैं, लेकिन जाहिर है, उन्होंने भूमि के मध्य भाग, जो कि जेरिको और ऐ है, के माध्यम से अपना रास्ता संघर्ष किया और फिर वहां तक जाने के लिए उत्तर की ओर मुड़ गए। इसलिए, वे वहां पहुंचने में थोड़ा विलंब कर रहे हैं, मुझे लगता है कि हम कहेंगे, लेकिन यह अच्छा है कि उन्होंने ऐसा किया।

और अध्याय 8, श्लोक 30 से 35 में, हमारे पास उस प्रकरण का वर्णन है। इस खंड में बहुत कुछ है जो लगभग शब्द दर शब्द है, व्यवस्थाविवरण 27 की पूर्ति। इसलिए, मैं बस इसमें से कुछ को पढ़ूंगा।

यहोशू 8, पद 30। उस समय, यहोशू ने एबाल पर्वत पर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये एक वेदी बनाई, जैसा यहोवा के दास मूसा ने इस्राएल के लोगों को आज्ञा दी थी। ध्यान दें, प्रस्तावना में पहले कही गई बात को दोहराते हुए, यहां मूसा को प्रभु का सेवक कहा गया है, जोशुआ को नहीं।

पुस्तक के अंत तक उसे प्रभु का सेवक नहीं कहा गया है। मूसा हर तरह से प्रभु का सेवक है। जैसा कि प्रभु के सेवक मूसा ने आदेश दिया था, जैसा कि मूसा के कानून की पुस्तक में लिखा है, व्यवस्थाविवरण में, बिना कटे पत्थरों की एक वेदी।

उन्होंने उस पर होमबलि, मेलबलि, पद 31, पद 32 चढ़ाए। उसने ऐसे पत्थर लिखे जो मूसा की व्यवस्था की नकल करते थे, जो लिखा जाता था। और अब मैं एक नई बात बताना चाहता हूं।

इसमें कहा गया है, सभी इस्राएल, प्रवासी और मूल-निवासी, अपने सभी रिश्तेदारों और अधिकारियों आदि के साथ, विपरीत दिशा में खड़े थे। मैं यहां रुकना चाहता हूं और बात करना चाहता हूं कि यह प्रवासी कौन था। मेरे संस्करण में, यह प्रवासी पढ़ता है।

कुछ संस्करणों में, यह एक अजनबी या विदेशी, एक विदेशी है। जो लोग इस्राएली नहीं हैं उनके लिए हिब्रू में कई अलग-अलग शब्द हैं। कुछ बहुत सामान्य हैं, लोग, राष्ट्र।

कुछ लोग एक विदेशी की तरह हैं जिन्हें इज़राइल वास्तव में कभी नहीं जानता था, लेकिन व्यापारियों के एक कारवां की तरह, उनके संपर्क में आ गया। यह शब्द बहुत ही विशिष्ट शब्द है और यह शब्द गेर है। और गेर एक विदेशी था जो इस्राएली पैदा नहीं हुआ था, परन्तु जिसने इस्राएल में और उसके बीच में निवास किया था।

गेर एक विदेशी था जो पैदाइशी इसराइली नहीं था, लेकिन जिसने इसराइल में और उसके बीच निवास किया था। पुस्तक में गेर का कई बार उल्लेख किया गया है, आमतौर पर तीन या चार अन्य लोगों के समूह में, जिस पर इज़राइल को विशेष ध्यान देना था। ये विधवाएं, अनाथ, परदेशी या विदेशी, गेर और गरीब हैं।

और ये सभी, एक तरह से, समाज में हाशिए पर थे। और वे सभी, एक तरह से, असहाय थे, या उन्हें मदद की ज़रूरत थी। तो, जाहिर तौर पर विधवाओं के पास उनका समर्थन करने के लिए कोई पति नहीं था।

अनाथ, कोई माता-पिता नहीं। गरीब, उनके पास अपना भरण-पोषण करने का कोई साधन नहीं था। और गेर एक बाहरी व्यक्ति था, एक विदेशी, जो इब्राहीम की वंशावली से पैदा नहीं हुआ था, और फिर भी जिसने इज़राइल में और उसके बीच निवास करने का विकल्प चुना था।

इस्राएल को उनके साथ अच्छा व्यवहार करना था। और मुझे लगता है कि विचार यह है कि इज़राइल को समाज में वंचितों, मूल-निवासी या विदेशी, विशेष रूप से विदेशियों के साथ व्यवहार करना था, ताकि देखने वाली दुनिया यह देख सके कि इज़राइल का भगवान अपने लोगों से दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है, और विदेशी लोग क्या चाहते हैं इस्राएल के परमेश्वर को गले लगाने के लिए। तो, यह अन्यजातियों का एक तरह से इज़राइल का हिस्सा बनने का एक और उदाहरण है।

यहाँ एक बहुत ही रोचक तथ्य है। पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद किया गया था, अगर हम पुराने नियम के लेखन के बारे में सोचें तो शायद 400 ईसा पूर्व के आसपास, या अंत में एज्रा नहेमायाह के समय के कुछ दशकों बाद समाप्त हुआ था। यह लगभग 400 वर्ष थे जब कोई वास्तविक नया रहस्योद्घाटन नहीं हुआ था, उसी अर्थ में हम पुराने और नए नियम के बारे में सोचते हैं।

लेकिन उस समय के दौरान, यूनानियों ने ज्ञात दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली थी, और ग्रीक वह भाषा बन रही थी जिसे लोग बोलते थे। और इसलिए, यहूदी भी ग्रीक भाषा बोल रहे थे, हिब्रू नहीं। हिब्रू पुराने नियम की भाषा थी।

तो, ऐसा हुआ कि यहूदी पुराना नियम नहीं पढ़ सके। प्रतिदिन यहूदी, वे यूनानी भाषा बोलते थे। इसलिए यहूदी नेताओं ने मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में बैठक की और पुराने नियम का ग्रीक में अनुवाद करने का निर्णय लिया।

इस संस्करण को सेप्टुआजेंट कहा जाता है, और शायद 250 ईसा पूर्व के आसपास। इसका उल्लेख करने के लिए मैं इसलिए रुका क्योंकि सेप्टुआजेंट में गेर का अनुवाद करने के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द बहुत दिलचस्प है। मैं आपको बस यह याद दिलाऊंगा कि सेप्टुआजेंट यहूदी विद्वानों द्वारा लिखा गया था, ईसाइयों द्वारा नहीं। लेकिन यहां हिब्रू शब्द गेर का अनुवाद करने के लिए ग्रीक शब्द लिया गया है।

मतांतरण करने वाले। और उस ग्रीक शब्द से हमें अंग्रेजी के शब्द जैसे proselyte, और proselytize मिलते हैं। और मुझे आशा है कि आप समझ गए होंगे कि एक धर्म परिवर्तन करने वाला अनिवार्य रूप से एक धर्मांतरित व्यक्ति होता है।

हम यहोवा के साक्षियों और मॉर्मन के बारे में बात करते हैं जो आस-पड़ोस में घूम रहे हैं, दरवाजे खटखटा रहे हैं, और वे धर्मांतरण कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम धर्म परिवर्तन करें और उनके विश्वास को अपनाएं। और इसलिए, यहूदी नेताओं ने समझा कि गेर एक धर्मांतरित व्यक्ति था।

गेर एक विदेशी था, जो इब्राहीम की वंशावली से पैदा नहीं हुआ था, लेकिन जिसने इब्राहीम के विश्वास को अपना लिया था। और इसलिए, गेर वह व्यक्ति था जो अनिवार्य रूप से इज़राइली था, जन्म से नहीं, रक्त से नहीं, बल्कि विश्वास से। तो, इन द्वंद्वों में से एक जो मैंने बड़े होते हुए सीखा, कि मुक्ति पुराने नियम में कार्यों या बलिदान बनाम नए में विश्वास के माध्यम से होती है, फिर से साक्ष्य के कई तरीकों से टूट गई है, जिनमें से एक यह है।

गेर का उल्लेख दस आज्ञाओं में किया गया था। विश्रामदिन के विषय में जो आज्ञा है, वह यह कहती है, कि तुम, अपनी पत्नी, अपने बेटे, अपनी बेटी, अपने दास, अपनी दासी, और अपने फाटकों के भीतर रहनेवाली गेर समेत सब्ब के दिन को स्मरण करके पवित्र रखो। इसलिए, गेर, विदेशी, से सब्ब का पालन करने की अपेक्षा की जाती है।

और निर्गमन 12 में, जब यह फसह के उत्सव के बारे में बात कर रहा है, तो यह बात करता है कि हर किसी को फसह का जश्न मनाना है जिसका खतना हुआ है, चाहे वह मूल निवासी हो या गेर। एक ही बात। तो यहां हमारे पास एक गेर का इसराइल के सबसे पवित्र समारोह, फसह में स्वागत होने की उम्मीद है, जब तक कि उसका खतना नहीं हो जाता।

खैर, अगर किसी विदेशी का खतना किया जाए तो इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि वे इज़राइल के विश्वास को अपना रहे हैं। वे इस्राएल के परिवार का हिस्सा बनना चाहते हैं। इसलिए, रहब के लिए गेर शब्द का उपयोग कभी नहीं किया जाता है, लेकिन मैं रहब को गेर में से एक के रूप में शामिल करूंगा।

हम इसे यहां देखते हैं। तो, मुझे लगता है कि यह वास्तव में दिलचस्प है। तो यहाँ जोशुआ अध्याय 8 के पाठ पर वापस जाएँ। तो, श्लोक 33 फिर से।

सभी इज़राइल, गेर और साथ ही मूल-निवासी, को इस अनुबंध नवीनीकरण समारोह में भाग लेना चाहिए। वे खड़े हैं, याजक वहां हैं, वे सन्दूक उठाते हैं। उनमें से आधे गेरिज़िम पर्वत पर खड़े हैं, और आधे एबाल पर्वत पर।

वे व्यवस्थाविवरण 27-28 में वापस आ गए हैं। उन दो पहाड़ों के बीच आशीर्वाद और श्राप पढ़े जाते हैं, या उन्हें पढ़ा जाना चाहिए। यहाँ वे ऐसा कर रहे हैं, और फिर वे लोगों को आशीर्वाद दे रहे हैं, पद 33 का अंत।

यहोशू ने व्यवस्थाविवरण 27-28 से कानून के शब्दों, आशीर्वाद और शाप को फिर से पढ़ा। पुस्तक में जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार मूसा ने जितनी आज्ञाएँ दी थीं, उनमें से एक भी शब्द ऐसा नहीं है, श्लोक 35, जो यहोशू ने किया, मुझे खेद है, मूसा ने जो कुछ आज्ञा दी थी, उसमें से एक भी शब्द ऐसा नहीं है, जो यहोशू ने सारी सभा के साम्हने न पढ़ा हो। इजराइल। पुरुष, छोटे बच्चे, गेर, जो उनके बीच रहते थे।

इसलिए, हम इज़राइल को व्यवस्थाविवरण 27 से आदेशों को ईमानदारी से निष्पादित करते हुए देखते हैं। समय तत्काल था या नहीं, मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हूँ, लेकिन वे चीजों को किताब के अनुसार करने की कोशिश कर रहे हैं, जैसा कि हमने पहले ही देखा है। पुस्तक। यह निश्चित रूप से एक प्रतिक्रिया है, निस्संदेह पाप और ऐ में हार, अचन के पाप और अब जीत की प्रतिक्रिया है, और वे ऐसा करने के लिए रुकते हैं, और फिर से गेर, प्रवासी की ओर ध्यान एक बिंदु को दर्शाता है पुराने नियम का ईश्वर सभी अन्यजातियों के साथ-साथ सिर्फ यहूदियों का भी ईश्वर है।

तो मैं अध्याय 6-8 के बारे में बस इतना ही कहना चाहता हूँ।

यह रूथ के माध्यम से जोशुआ पर अपनी शिक्षा में डॉ. डेविड हॉवर्ड हैं। यह सत्र संख्या नौ है, जोशुआ 6-8, जेरिको और ऐ।